ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

# भारत–पाक युद्ध को रोकने में परमाणु हथियारों और भारत–पाक युद्धों की भूमिका

**Hemant Kumar Pandey, Ph. D.**

*Department of Defense Students*

*Meerut College, Meerut*

## प्रस्तावनाः

1947 से पाकिस्तान और भारत के बीच मुद्दे, संघर्ष और विवाद जारी हैं लेकिन 1999 के कारगिल युद्ध के बाद से दोनों देशों के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ है। इस पेपर में यह देखा जाएगा कि कैसे परमाणु हथियार, लोकतंत्र और युद्ध के अनुभव ने 1999 से भारत–पाक युद्ध को रोका है। थॉमस शेलिंग ने अपनी 1966 की पुस्तक द डिप्लोमेसी ऑफ वायलेंस में लिखा था कि भविष्य की सैन्य जीत युद्ध से नहीं, बल्कि ''जबरदस्ती, धमकी और प्रतिरोध'' से तय होगी। प्रतिरोध को एक सैन्य क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो विरोधी राज्यों पर आक्रमण करने के लिए एक निरूत्साह के रूप में कार्य करता है।

परमाणु हथियारों ने 1999 से भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध को रोका है, क्योंकि परमाणु हथियार इसमें शामिल जोखिमों के कारण विजय प्राप्त करना कठिन बनाते हैं। (मियरशाइमर, 1990) के अनुसार परमाणु हथियार शांति का पक्ष लेते हैं और विजय को कठिन बनाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि परमाणु हथियार सामूहिक विनाश का कारण बनते हैं। इसी तरह अपराध–रक्षा सिद्धान्त भविष्यवाणी करता है और अनुभवजन्य रूप से साबित करता है कि युद्ध उन अवधियों में आम है जब विजय आसान होती है। हालांकि, जब विजय कठिन होती है, तो राज्य आक्रामकता से बचते हैं क्योंकि जीत बहुत महंगी है, युद्ध कम खर्चीला और प्रयास करने और सफल होने में आसान होता है (एवेरा, 1998)। पाकिस्तान में, भारत के मामले में दोनों देश परमाणु शक्तियां हैं। 1999 का कारगिल युद्ध पाकिस्तान और भारत के बीच अब तक का आखिरी युद्ध था और दोनों देशों के परमाणु शक्ति बनने के बाद हुआ एकमात्र युद्ध था। (लावॉय, 2009) के अनुसार, भले ही कारगिल संघर्ष के दौरान परोक्ष बयान दिए गए थे, जिन्हें परमाणु खतरों के रूप में व्याख्यायित किया गया था, न तो पाकिस्तान और न ही भारत ने युद्ध जीतने के लिए परमाणु हथियारों का उपयोग करने का जोखिम उठाया। इसके अलावा एक और कारण है कि परमाणु हथियारों ने 1999 से पाकिस्तान और भारत के बीच युद्ध को रोका है क्योंकि दोनों देशों के द्वारा आत्मरक्षा के लिए परमाणु हथियारों का इस्तेमाल किया गया है।

## परमाणु भयादोहनः

परमाणु हथियारों के कारण आत्मरक्षा आसान है। इसने 1999 से भारत–पाक युद्ध को रोकने में एक भूमिका निभाई है। (मियर्सहाइमर, 1990) के अनुसार परमाणु हथियार सबसे अच्छे निवारक हैं, व न केवल उच्च जोखित और लागत की गारंटी देते हैं, बल्कि आक्रामकता की तुलना में आत्मरक्षा के लिए भी अधिक उपयोगी हैं। अपराध–रक्षा सिद्धान्त आनुभविक रूप से साबित करता है कि जिन राज्यों के पास बड़े आक्रामक अवसर या रक्षात्मक कमजोरियाँ हैं, उनमें युद्ध शुरू करने और लड़ने की अधिक संभावना है। यह भविष्यवाणी करता है कि अपराध–प्रभुत्व आमतौर पर युद्ध की ओर ले जाता है (एवेरा, 1998)। भारत–पाक के मामले में दोनों देशों ने अपने परमाणु हथियारों का इस्तेमाल आत्मरक्षा में किया है, ताकि युद्ध शुरू करने के बजाय उसे रोका जा सके। (गेलर, 2003) के अनुसार भारत और पाकिस्तान दोनों के पास परमाणु हथियारों की डिलीवरी के लिए विमान और बैलिस्टिक मिसाइलें हैं जो लगभग सभी विरोधी देश के क्षेत्र तक पहुंचने में सक्षम हैं। लेकिन दोनों देशों ने हमले के बजाय आत्मरक्षा के लिए इसका इस्तेमाल किया है। परमाणु हथियारों का इस्तेमाल न केवल आत्मरक्षा के लिए किया गया है बल्कि उन्होंने राज्यों के बीच समानता की डिग्री भी पैदा की है।

परमाणु हथियार प्रणाली में समानता की डिग्री को प्रभावित करते हैं, वे उन देशों की सापेक्ष शक्ति की बराबरी करते हैं जो उनके पास हैं (मियरशाइमर, 1990)। पाकिस्तान के परमाणु शक्ति बनने के बाद, उसने देश की सौदेबाजी की शक्ति को प्रभावित किया है, इस प्रकार दोनों देशों के बीच युद्ध को रोका है। (मियरशाइमर, 1990) के अनुसार परमाणु हथियार पारस्परिक रूप से सुनिश्चित विनाश की स्थिति पैदा करते हैं जो राज्यों के बीच शक्ति संबंधों को समानता की ओर बदलकर शांति को मजबूत करता है। 1974 में भारत द्वारा अपना पहला परमाणु बम परीक्षण करने के बाद सुरक्षा सुविधा भारत–पाक की स्थिति को सबसे अच्छी तरह से समझाती है। भारत द्वारा परमाणु परीक्षणों ने पाकिस्तान को अपनी सुरक्षा बढ़ाने के लिए मजबूर किया औरा 1998 में पाकिस्तान ने अपना पहला सफल परमाणु परीक्षण किया। (अहमद, 1999) के अनुसार पाकिस्तान की परमाणु नीति परमाणु हथियार विकास में भारत के साथ बराबरी का दर्जा हासिल करने की देश की इच्छा के इर्द–गिर्द घूमती है। (अहमदख 2000) के अनुसार पाकिस्तानी निर्णय निर्माताओं का मानना है कि परमाणु हथियारों के अधिग्रहण ने पाकिस्ता की सौदेबाजी की शक्ति को मजबूत किया है। आज वे दोनों परमाणु शक्तियाँ हैं, जो बदले में कट्टर प्रतिद्वंद्वियों के बीच युद्ध को रोक रही हैं।

## लोकतांत्रिक प्रभावः

परमाणु हथियारों के अलावा, लोकतंत्र एक अन्य कारक है जिसने 1999 से पाकिस्तान और भारत के बीच युद्ध को रोकने में भूमिका निभाई है। लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति ने युद्ध की रोकथाम में अपनी भूमिका निभाई है। (रसेट, लेने, स्पिरो और डॉयल, 1995) के अनुसार लोकतांत्रिक सरकारें युद्ध में जाने से हिचकिचाती है, क्योंकि वे अपने नागरिकों के प्रति जवाबदेह हैं। (लेने, 1994)

के अनुसार खून और खजाने में युद्ध की कीमत नागरिकों द्वारा चुकाई जाती है। यदि कीमत अधिक है, तो लोकतांत्रिक सरकार चुनावी प्रतिशोध का शिकार हो सकती है। लोकतांत्रिक युग के बजाय सैन्य शासन में युद्ध आम है जैसा कि पाकिस्तान और भारत के मामले में देखा गया है। (मियरशाइमर, 1990) के अनुसार द्रोही राष्ट्रवाद आमतौर पर सैन्य शासन के तहत विकसित होता है जब राज्य युद्ध के लिए नागरिकों को जुटाने के लिए राष्ट्रवादी अपील को उपयोग करते हैं। 1947 में पाकिस्तान की आजादी के बाद से इसे पाकिस्तान और भारत के दृष्टिगत से समझते हुए दोनों देशों ने 1947, 1965 और 1971 में तीन बड़े युद्ध और 1999 में एक मामूली युद्ध लड़ा है। 1947 का युद्ध एक लोकतांत्रिक सरकार के तहत लड़ा था, जबकि 1965 और 1971 के युद्ध थे। सैन्य शासन के तहत। भले ही 1999 का कारगिल युद्ध नवाज शरीफ की लोकतांत्रिक सरकार के कार्यकाल के दौरान हुआ था, लेकिन इसकी शुरूआत सेना प्रमुख जनरल मुशर्रफ (चक्रवर्ती) ने की थी। इस प्रकार 1947 के युद्ध को छोड़कर, सभी भारत–पाक युद्ध या तो सैन्य शासन में थे या सैन्य नेताओं द्वारा शुरू किए गए थे। यह इस तर्क का समर्थन करता है कि सैन्य शासन में युद्ध आम है। इसके साथ ही लोकतांत्रिक मानदंड युद्ध की रोकथाम का एक अन्य कारण है।

आदर्श, मूल्य, संस्कृति, धारणाएं और व्यवहार एक लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा हैं जो हिंसा के बजाय शांति को बढ़ावा देते हैं। पाकिस्तान और भारत के मामले में मानदंड और मूल्य अतीत में युद्ध को नहीं रोकते थे, लेकिन पिछले 15 वर्षों में दोनों राज्यों के बीच युद्ध के मानदंड बदल गए हैं, जिन्होंने 1999 से भारत–पाक युद्ध को रोकने में भूमिका निभाई है। (लेने, 1994 के अनुसार) लोकतंत्र मानते हैं कि अन्य लोकतंत्र भी संघर्षों को हल करने का प्रयास करेंगे और शांतिपूर्ण समझौते की ओर बढ़ने के लिए मानदंड लागू करेंगे। इसके अलावा (लेने, 1994) में कहा गया है कि लोकतांत्रिक राज्य एक और दूसरे के साथ सहयोग करके लाभान्वित होना चाहते हैं। वे पारस्परिक रूप से लाभकारी समुदाय बनाने के लिए अन्य लोकतंत्रों के साथ बातचीत करते हैं। यह समुदाय अपनी बातचीत में युद्ध से बचता है। जब पाकिस्तान एक उदार लोकतंत्र बन जाता है, तभी दोनों राज्यों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में सुधार हो सकता है, जिससे साझा मानदंडों के आधार पर दोनों के बीच आपसी सम्मान हो सकता है। भले ही पाकिस्तान अभी भी एक उदार लोकतंत्र नहीं है, लेकिन पिछले 15 वर्षों में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध के मानदंडों में बदलाव आया है। दोनों राज्यों ने खुले संचालन (चक्रवर्ती) के बजाय गुप्त संचालन रणनीति अपनाई है। इसने पाकिस्तान और भारत के बीच विवाद, सघर्ष का जन्म दिया है लेकिन युद्ध को रोका है। इसी तरह एक और कारण जो पहले दोनों देशों के बीच युद्ध का कारण बना और आज युद्ध को रोक दिया है, वह है लोकतंत्रीकरण।

भारत–पाक युद्ध तब हुए जब पाकिस्तान लोकतंत्रीकरण की स्थिति में था। (मैन्सीफील्ड एंड स्नाइडर, 1995) के अनुसार जब राज्य लोकतंत्रीकरण या निरंकुशता के संक्रमणकालीन चरण में होते हैं तो वह अत्याधिक आक्रामक और युद्ध–प्रवण हो जाते हैं। इस दौरान व अन्य राज्यों के साथ अधिक

युद्ध लड़ते हैं। इसके अलावा (मैन्सीफील्ड एंड स्नाइडर, 1995) कहते हैं कि लोकतांत्रिक और निरंकुश राज्यों के अधिक हिंसक होने का कारण आंतरिक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा है जो एक राज्य के संक्रमणकालीन चरण में जाने के बाद उत्पन्न होती है। पुराने और नए अभिजात वर्ग अपने–अपने संसाधनों का उपयोग जनता को जुटाने और बड़े पैमाने पर सहयोगी बनाने के लिए करते हैं जो बेकाबू हो जाते हैं और अक्सर युद्ध की ओर ले जाते हैं। भारत के साथ पाकिस्तान के पहले संघर्ष के दौरान पाकिस्तान के नजरिए से देखें तो पाकिस्तान लोकतंत्रीकरण की स्थिति में था। फिर 1965 और 1971 में दूसरे और तीसरे युद्ध के दौरान पाकिस्तान 1950 से 1972 तक लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया में स्थिर था। लेकिन अब यह पाकिस्तानी इतिहास में पहली बार हुआ है कि देश में लगातार तीसरी लोकतांत्रिक सरकार शासन कर रही है जो भारत–पाक युद्ध को रोकने का एक कारण हो सकता है। परमाणु हथियार ओर लोकतंत्र द्वारा निभाई गई भूमिका के अलावा, युद्ध का अनुभव एक और कारक है जिसने पाकिस्तान और भारत को सिखाया है कि युद्ध एक व्यवहार्य विकल्प नहीं है।

## युद्ध अनुभवः

युद्ध के अनुभव ने पाकिस्तान और भारत को सिखाया है कि युद्ध महंगा है और समझदार विकल्प नहीं है। (मियरशाइमर, 1990) के अनुसार यूरोपीय लोगों ने प्रथम विश्व युद्ध (WWI) और द्वितीय विश्व युद्ध ( WWII) के अपने अनुभव से सीखा कि युद्ध पांरपरिक हो या परमाणु, यह राज्यों के लिए उपयुक्त विकल्प नहीं है। भारत–पाक 1971 के युद्ध में पाकिस्तान ने दो युद्ध लड़े, पहला पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्ताी सरकार को उसकी वैधता से वंचित किया और दूसरा भारत के साथ पाकिस्तान का बांग्लादेश युद्ध था (सिसॉन एंड रोज़, 1991)। 1971 के युद्ध में सभी पक्षों ने युद्ध के स्वीकृत मानदंडों के बाहर हिंसा और अमानवीयता का कार्य किया और पाकिस्तान को एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ी क्योंकि उसने अपने देश, पूर्वी पाकिस्तान का आधा हिस्सा खो दिया, जिसे आज बांग्लादेश (बोस, 2005) के रूप में जाना जाता है। विशेष रूप से कारगिल युद्ध से एक और सीखने वाला सबक यह था कि अब भारत और पाकिस्तान दोनों परमाणु शक्तियाँ हैं, इसलिए वे एक और युद्ध का जोखिम नहीं उठा सकते।

## कारगिल युद्ध :

पाकिस्तान–भारत 1999 कारगिल युद्ध का अनुभव एक सबक था कि परमाणु युद्ध बर्दाश्त से बाहर है। इससे पहले इस पत्र में कहा गया था कि (मियरशाइमर, 1990) के अनुसार परमाणु युद्ध जोखिम भरा और महंगा है। पाकिस्तान–भारत के मामले में (टेलिस, फेयर और मेडबी, 2001) के अनुसार कारगिल युद्ध ने पाकिस्तान को सिखाया कि कारगिल जैसे ऑपरेशनों की कीमत बहुत अधिक होती है। इसके अलावा (टेलिस, फेयर एवं मेडबी, 2001) में कहा गया है कि पाकिस्तान ने धीरे–धीरे सीखा है कि एक देश के रूप में यह राजनीतिक रूप से अस्थिर है, आर्थिक रूप से निर्भर है और युद्ध कोई विकल्प नहीं है। इसके अलावा (गांगुली, 1995) के अनुसार भारत और पाकिस्तान के बीच एक

और पूर्ण पैमाने पर युद्ध की संभावना नहीं है क्योंकि परमाणुकरण से क्षेत्र में स्थिरता आई है। भले ही युद्ध एक विकल्प था, इतिहास ने साबित कर दिया कि पाक–भारत युद्धों ने किसी भी समस्या का समाधान नहीं किया है, केवल नए बनाए है।

पाकिस्तान–भारत युद्ध के अनुभव स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं कि युद्ध संघर्ष को हल नहीं करते हैं, वे कुछ मामलों में इसे बढ़ा देते हैं। पाकिस्तान और भारत ने आजादी के बाद से चार युद्ध लड़े हैं और चार में से तीन युद्ध कश्मीर क्षेत्र पर लड़े गए थे। इसके बावजूद कश्मीर का मुद्दा जस का तस बना हुआ है, और भी बुराख इसका मतलब है कि युद्ध ने पाकिस्तान और भारत के बची कश्मीर विवाद को हल नहीं किया। पाकिस्तान और भारत को बातचीत करने की जरूरत है क्योंकि युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। इस प्रकार, चार युद्धों के पिछले अनुभव के साथ–साथ लोकतंत्र और परमाणु हथियार जैसे कारकों ने 1999 से भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध को रोका है।

## निष्कर्ष

भारत–पाकिस्तान परमाणु रंग की तुलना में न्यूनतम प्रतिरोध प्रदान करने में परमाणु हथियारों की भूमिका का पता लगाया। निबन्ध ने तर्क दिया कि परमाणु हथियारों ने पूर्व–परमाणु काल की तुलना में क्षेत्र की स्थिरता में काफी अंतर किया है। 1998 के बाद से भू–रणनीतिक विकास के निबंध के विश्लेषण (जिस वर्ष दोनों राज्यों ने 'आधिकारिक तौर पर परमाणु क्षमता प्राप्त की थी') ने दो पूर्व शर्तों का खुलासा किया, जिन्हें भविष्य में परमाणु हथियारों के लिए एक प्रभावी निवारक रणनीति बनने के लिए पूरा किया जाना चाहिए। सबसे पहले, यह दिखाया गया कि कैसे दो राज्यों की पूर्व–माना 'तर्कसंगतता' नहीं दी जानी चाहिए। भारत और पाकिस्तान के अन्तर्राष्ट्रीय अप्रसार योजना में शामिल होने से इनकार करने के साथ–साथ परमाणु निर्णय लेने पर नागरिक नियंत्रण के लिए संस्थागत तंत्र की कमी, उन स्थितियों के लिए जगह छोड़ती है जहां घरेलू हितों को उन्नत किया जा सकता है, प्रणालीगत परिणामों की अवहेलना। इस दावे का समर्थन करने वाला मुख्य उदाहरण पाकिस्तान का सैन्य शासन था और 1999 में भारतीय प्रतिक्रिया की संवेदनशीलता के लिए उसकी अवहेलना थी। एक परमाणु प्रलय नहीं हुआ। फिर भी कपूर और अन्य भू–रणनीतिज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि इस उदाहरण में पाकिस्तान के तर्कहीन व्यवहार के कारण निवारक हमले हो सकते हैं जो परमाणु प्रक्षेपण में चरमोत्कर्ष पर पहुंच सकते थे। दूसरे, निबंध ने तर्क दिया कि कैसे प्रभावी निरोध के लिए वाल्ट्ज के सबसे अभिन्न तर्कों में से एक, कि परमाणु हथियारों के कारण दूसरे राज्य की जबरदस्त क्षमता को स्वीकार किया जाता है, भारत–पाकिस्तान परमाणु रंग में लगातार ऐसा नहीं रहा है। उनके दावे का समर्थन करने के लिए दिया गया मुख्य उदाहरण 2001–2002 का संकट था। कपूर के संघर्ष के बाद के विश्लेषण से पता चला कि नई दिल्ली का संयम मुख्य रूप से इस विश्वास के कारण था कि जबरदस्त कूटनीति प्रभावी हो रही थी। इस उदाहरण में, इस्लामाबाद की परमाणु क्षमता की जबरदस्ती की क्षमता का प्राथमिकता नहीं दी गई थी।

1999 की कारगिल घटना के बाद से पाकिस्तान और भारत के बीच आधिकारिक रूप से युद्ध नहीं हुआ है। फिर भी इस समय से 2008 के मुंबई बम विस्फोट और 2013 में भारत–पाकिस्तान सीमा पर झड़प जैसी बड़ी घटनाएं हुई हैं। 2013 में एक परमाणु नौसेना हथियारों की दौड़ हो रही है क्योंकि दोनों राज्य दक्षिण एशियाई आधिपत्य बनाने की होड़ में हैं। हालांकि परमाणु हथियारों ने अतीत में बढ़ी हुई क्षेत्रीय स्थिरता प्रदान की है, वर्तमान भू–राजनीतिक स्थिति, जातीय–धार्मिक मतभेदों और क्षेत्रीय विवादों के स्वदेशी कारकों के साथ, यह दर्शाता है कि पाकिस्तान और भारत की तर्कसंगतता को राज्य स्तर पर बनाए रखा जाना चाहिए, जिससे परमाणु हथियार निरोध भविष्य में प्रभावी हो सके और युद्धों को रोका जा सके।

## सन्दर्भ

*अहमद, एस. (1999)। पाकिस्तान का परमाणु हथियार कार्यक्रमः महत्वपूर्ण मोड़ और परमाणु विकल्प। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, 23(4)।*

*अहमद, एस. (2000)। परमाणु–सशस्त्र पाकिस्तान की सुरक्षा सुविधाएं। तीसरी दुनिया की तिमाही, 21(5)।*

*बोस, एस. (2005)। एनाटॉमी ऑफ वायलेंसः 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में गृह युद्ध का विश्लेषण। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 40(41)।*

*चक्रवर्ती, ए. (एन.डी.)। प्रिज्म ऑफ डेमोक्रेटिक पीस थीसिस के माध्यम से भारत–पाकिस्तान संबंध।*

*एवरा, एस.वी. (1998)। अपराध, रक्षा, और युद्ध के कारण। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, 22(4)।*

*गांगुली, एस. (1995)। बिना अंत के युद्धः भारत–पाकिस्तान संघर्ष। द एनल्स ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ पॉलिटिकल एंड सोशल साइंस।*

*गेलर, डी.एस. (2003)। परमाणु हथियार और भारत–पाकिस्तान संघर्षः एक क्षेत्रीय शक्ति चक्र के वैश्विक प्रभाव। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति विज्ञान की समीक्षा, 24(1)।*

*लावॉय, पी। (2009)। दक्षिण एशिया में असममित युद्धः कारगिल संघर्ष के कारण और परिणाम। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।*

*लेने, सी. (1994)। कांट या कैंटः द मिथ ऑफ द डेमोक्रेटिक पीस। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, 19(2)।*

*मैन्सफील्ड, ई.डी., और स्नाइडर, जे. (1995)। लोकतंत्रीकरण और युद्ध का खतरा। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, 20(1)।*

*मियार्सहाइमर, जे जे (1990)। बैक टू द फ्यूचरः शीत युद्ध के बाद यूरोप में अस्थिरता। अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा।*

*रसेल, बी.। लेने, सी।, स्पिरो, डी।, और डॉयल, एम। (1995)। लोकतांत्रिक शांति। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, 19(4)।*

*सिसन, आर, और रोज़ एल.ई. (1991)। युद्ध और अलगावः पाकिस्तान, भरत और बांग्लादेश का निर्माण। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस।*

*टेलिस, ए.जे., फेयर, सी.सी., और मेडबी, जे.जे. (2001)। नाभिकीय छत के तहत सीमित संघर्ष*